Ancient Vedic Mantras and Rituals

VEDIC PRAYERS

Gopashtami 2025 | गोपाष्टमी का महत्व, पूजा विधि और कथा | PDF

भारत में गाय को उच्च दर्जा प्राप्त है। धार्मिक कारणों से गाय को भी माता का दर्जा दिया गया है। इसी कारण से हिंदुओं की आस्था और विश्वास में गाय का विशेष महत्व है। हिंदू धर्म ग्रंथों के अनुसार कार्तिक माह की शुक्ल पक्ष अष्टमी को गोपाष्टमी के रूप में मनाया जाता है। इस दिन गाय की पूजा की जाती है। ऐसा माना जाता है कि जो लोग गोपाष्टमी (Gopashtami) की शाम को गाय की पूजा करते हैं उन्हें सुख, समृद्धि और खुशहाली मिलती है। गोपाष्टमी के दिन गाय की पूजा करने का विशेष महत्व है।

कार्तिक शुक्ल पक्ष की अष्टमी को भगवान श्रीकृष्ण ने छह वर्ष की उम्र में पहली बार गाय चराई थी। तभी से इस दिन को गोपाष्टमी के रूप में मनाया जाता है। इसका उल्लेख श्रीमद्भगवद्गीता में भी है।

गोपाष्टमी तिथि

गोपाष्टमी – **गुरुवार, 30 अक्टूबर 2025**

अष्टमी तिथि प्रारंभ – **29 अक्टूबर 2025 को सुबह 9:23 बजे**

अष्टमी तिथि समाप्त – **30 अक्टूबर 2025 को सुबह 10:06 बजे**

गोपाष्टमी की पौराणिक कथा

पौराणिक मान्यता के अनुसार, जब भगवान श्रीकृष्ण छह वर्ष के थे, तब एक दिन उन्होंने अपनी माता यशोदा से कहा — *“मां, अब मैं बड़ा हो गया हूं, अब केवल बछड़ों को नहीं, बल्कि गायों को भी चराने जाऊंगा।”*

यह सुनकर माता यशोदा ने प्रेमपूर्वक कहा — *“लाल, यह बात तुम्हारे बाबा नंद से कहो।”*

तब नन्हे कान्हा तुरंत नंद बाबा के पास पहुंचे और बोले — *“बाबा, अब मैं गायों को चराने जाना चाहता हूं।”*

नंद बाबा ने मुस्कराकर कहा — *“लाल, तुम अभी छोटे हो, अभी केवल बछड़ों को ही चराओ, गायों को चराने के लिए थोड़ा और बड़ा होना पड़ेगा।”*

लेकिन बाल गोपाल अपनी बात पर अडिग रहे। यह देखकर नंद बाबा ने कहा — *“अच्छा, पंडितजी को बुला लाओ, वही बताएंगे कि गाय चराने का उचित समय कब है।”*

कृष्णजी तुरंत दौड़ते हुए पंडितजी को बुला लाए। पंडितजी ने पंचांग खोला, उंगलियों पर गणना की, और काफी देर तक विचार में मग्न रहे।

जब उन्होंने कुछ नहीं कहा तो नंद बाबा ने उत्सुकता से पूछा — *“क्या बात है पंडितजी, आप इतने गंभीर क्यों हैं?”*

पंडितजी बोले — *“बाबा, आज ही का दिन गाय चराने के लिए शुभ मुहूर्त है। इसके बाद पूरे वर्ष तक ऐसा कोई मुहूर्त नहीं रहेगा।”*

यह सुनते ही श्रीकृष्ण प्रसन्न हो उठे और उसी क्षण अपनी गायों को लेकर वन की ओर निकल पड़े।

जिस दिन से बाल गोपाल ने गायों को चराना प्रारंभ किया, वह दिन **कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि** थी।

ऐसी करे गाय की पूजा

मान्यता है कि गोपाष्टमी (Gopashtami) के दिन जब श्रीकृष्ण गाय चराने के लिए जंगल में गए थे तो गाय के सींग को सोने से सजाया गया था। गाय की पीठ पर तांबा लगाया गया। गाय के गले में घंटी लगाई गई और गाय के खुर में चांदी लगाई गई। कहा जाता है कि इस दिन पंचोपचार सहित 16 प्रकार की सामूहिक पूजा करने की परंपरा है। गोपाष्टमी (Gopashtami) के दिन गौ माता को फूलों से सजाना चाहिए और चंदन का तिलक लगाना चाहिए। इसके बाद गाय की पूजा करने के साथ ही उसे आटा, गुड़ और अन्य खाद्य सामग्री भी देनी चाहिए। इस दिन गाय के साथ श्रीकृष्ण की पूजा करने का भी विशेष महत्व है।

एक मान्यता यह भी

एक अन्य पौराणिक मान्यता के अनुसार कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से सप्तमी तक भगवान श्री कृष्ण गोवर्धन पर्वत को अपनी उंगलियों में धारण करते हैं। गोपष्टमी कार्तिक शुक्ल अष्टमी के आठवें दिन मनाई जाती है जब इंद्र देव का अहंकार टूटा ओर वें श्रीकृष्ण के पास क्षमा मांगने आए, तभी से कार्तिक शुक्ल अष्टमी को
गोपाष्टमी (Gopashtami) का उत्सव मनाया जाता है

गोपाष्टमी के दिन दूध का करे दान

गोपाष्टमी (Gopashtami) के दिन दूध का दान करना उत्तम होता है। ऐसा कहा जाता है कि अगर आपकी कुंडली में शुक्र ग्रह और चंद्रदोष हो तो दूध का दान शुभ फल देता है।

गाय के चरणों की धूल को माथे पर लगाएं
गोपाष्टमी (Gopashtami) का दिन बहुत ही शुभ माना जाता है। इस दिन गाय के शुभ चरणों की धूल माथे पर लगानी चाहिए और सूर्यास्त के समय गाय की पूजा भी करनी चाहिए। साथ ही दण्डवत प्रणाम भी करें। इससे जीवन में हमेशा सफलता की प्राप्ति हो सकती है।

गोपाष्टमी के दिन गाय को खिलाएं चारा
गोपाष्टी गौ माता को समर्पित है। इसलिए इस दिन गाय या बछड़ों को हरा चारा खिलाना चाहिए। इसे बहुत शुभ माना जाता है। ऐसा कहते हैं कि गाय को हरा चारा खिलाने से दांपत्य सुख की प्राप्ति होती है और वैवाहिक जीवन में आ रही सभी समस्याओं से भी छुटकारा मिल जाता है।

Related Articles

श्री कृष्ण चालीसा

श्री कृष्ण जी आरती

THANKS FOR READING

READ MORE RELIGIOUS CONTENT ON

vedicprayers.com

VEDIC PRAYERS

Follow us on: